IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ज्ञान की बुनियाद : प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा

डा0 राहुल पटेल
व्याख्याता, जिला शिक्षा में प्रशिक्षण संस्थान (डायट) सिवान

सारांश –

प्रारंभिक बाल्यवस्था को पहले केवल देखभाल से संबंधित माना जाता था परंतु समय के साथ बदलते परिदृश्य में जहाँ अनेक प्रकार के वैज्ञानिक शोध यह सिद्ध कर रहे है कि शुरूआती बचपन बच्चे के विकास का नाजुक दौर होता है एवं बाद के वर्षो में शैक्षिक परिणामों के लिहाज से यह बहुत महत्त्वपूर्ण दौर होता है। भारतीय समाज में भी बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षो को महत्त्व देने की परंपरा रही है तथा बच्चों के विकास को उत्प्रेरित करने की एवं उन्हें संस्कार, बुनियादि मूल्यों और सामाजिक कौशल प्रदान करने की प्रथाओं की भी एक समृद्व धरोहर रही है। पहले यह मुख्य रूप से परिवारों में देखरेख की पारंपरिक प्रथाओं के माध्यम से दी जाती थी जो सामान्यतः परस्पर आदान–प्रदान के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पॅहुचती रहती थी। परंतु पिछले कुछ दशकों में परिवार और उसके साथ–साथ सामाजिक संदर्भ परिवर्तित हो गए हैं। अतः अब विश्व स्तर पर प्रारंभिक वर्षो की महत्ता को समझा जाने लगा है।

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य उन सभी लक्ष्यों को हासिल करना है जो पढ़ने और लिखने की योग्यता पर निर्भर करते हैं। वर्तमान में अनेक प्रकार के सैद्धांतिक विमर्श से यह स्पष्ट होता है मनुष्य के काम करने के अनेक पहलुओं के लिए प्रारंभिक बचपन (जन्म से लेकर 8 साल की उम्र तक) विकास का एक बेहद महत्त्वपूर्ण और निर्णायक दौर होता है। भविष्य के विकास और सीखने की बुनियाद बच्चे की 3 से 8 आयु वर्ष की अवधि के दौरान ही रखी जाती है जिसमें पूर्व प्राथमिक के वर्ष तथा प्रारंभिक शिक्षा के पहले कुछ वर्ष शामिल रहते हैं। इन वर्षो को अब अधिकाधिक रूप से बाद के वर्षो के शैक्षिक परिणामों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

प्रस्तावना –

पुरातन युग से ही अनेक दर्शन शास्त्रियों ने बाल्यावस्था की प्रकृति उनकी विभिन्न अवस्थाएँ व समाजीकरण की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया है। पश्चिमी विचारक जैसे रूसो, फ्रोबेल, ड्यूई, मौनटेसरी आदि प्रारंभिक बाल्यावस्था हेतु शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी रहे है जहाँ ड्यूई ने सीखने के अच्छे अवसर पर बल देते हुए कहा है कि ‘‘शिक्षा की शुरूआत बच्चों की अपनी गतिविधियों, प्रवृति व अभिरूचियों में होनी चाहिए। वही प्रोबेल का यह मानना है कि ‘‘बच्चों के सीखने में प्रत्यक्ष अवलोकन व क्रिया सबसे अधिक मददगार होती है’’। उनके विचारों ने संवेदनशील व व्यवहारिक गतिविधियों को पाठ्यक्रम में शामिल करने के नए आयाम खोले हैं। उनके खेल खोज कला गीत कविता व गति के माध्यम से बच्चों की स्वयं सीखने की भूमिका पर कई नए विचार प्रस्तुत किए। इन विचारों के फलस्वरूप यह आयाम कक्षा कक्षीय गतिविधियों का हिस्सा बन पाए हैं।

अनेक भारतीय विचारकों ने भी बच्चों की गतिविधियों में रूचि व उससे सीखने पर विचार प्रकट किए हैं। गॉधी, टैगोर, अरबिन्दो, गिजूभाई उन पहले भारतीय विचारकों में शामिल हैं जिन्होनें बच्चों की शिक्षा के लिए बाल–विकास या बाल केन्द्रित अवधारणा का निर्माण किया था।

उनका यह मत था कि शिक्षा बच्चों को मातृभाषा में दी जानी चाहिए। साथ ही शिक्षा बच्चों के सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण से संबंधित होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि समुदाय को भी बच्चों की शिक्षा में सीधी भागीदारी निभानी चाहिए क्योकि भाषा अभिव्यक्ति का सच्चा साधन है, मातृभाषा में बच्चे स्वयं को अभिव्यक्त कर पाते हैं।

विकासात्मक मनोविज्ञान व बाल विकास के विचारकों में पियाजे, बूनर, बाइगोटस्की, गार्डनर ने अपने शोध से खेल व गतिविधि को बच्चों के सीखने का प्राकृतिक तरीका बताया है।

पियाजे ने इस बात पर जोर दिया है कि '' बच्चे स्वयं ज्ञान का निर्माण करते है, वे स्वयं के अनुभव को एकत्रित कर नई जानकारी के साथ सह संबंध स्थापित करते हुए लगाातार अपने आस–पास की दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं। वाइगोट्स्की ने यह मत दिया कि ''बच्चे सामाजिक व सांस्कृतिक अनुभवों को अर्जित करने में परस्पर संलग्न होते है। अतः अपने से अधिक अनुभवी दूसरों के साथ की सह अंतःक्रिया सीखने व ज्ञान के निमार्ण का प्रमुख कारक है। वाइगोट्स्की ने यह भी माना कि '' बुद्वि का विकास संस्कृति के उपकरणों के समावेश से ही होता है जोरोम ब्रूनर ने भी यह प्रस्तावित किया कि '' बच्चे जानकारियों, ज्ञान व स्मृति को तीन अलग–अलग संबंधित ढंगो से प्रस्तुत करते है जैसे क्रिया आधारित छवि आधारित व भाषा चिन्ह आधारित। उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि किस प्रकार जटिल अवधारणाओं को स्पाइरल/पेचदार पाठ्क्रम की मदद से बच्चों की सिखाया जा सकता है। इसमें पहले सर्वाधिक सरल स्तर को लिया जाता है। जिसमें बच्चे ठोस वस्तुओं के माध्यम से सीखते हैं व जटिल स्तरों पर उन्हें पुनः दोहराते हैं। अतः विषय कठिनता के क्रमशः बढ़ते चरणों में सिखाए जाने चाहिए।

उनका मूल मत यह भी रहा कि '' सीखना एक सक्रिय व अंतः क्रियात्मक प्रक्रिया है जिसमें बच्चे खेल व दूसरे अनुभवों के साथ अंतःक्रिया कर सीखते हैं''। खेल बच्चों के सीखने व विकास को आगे बढ़ाता हैं।

अतः प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम बच्चों के सीखने के पैटर्न व बच्चों की प्रकृति तथा विचारकों व दार्शनिकों की विचारधाराओं पर आधारित होनी चाहिए

जीवन के ये शुरूआती वर्ष मानव जीवन के लिए अत्यंत नाजुक होते हैं इन वर्षों में विकास की दर विकास के किसी भी चरण से अधिक तीव्र होते हैं। तंत्रिका विज्ञान के शोध में बच्चों के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के महत्त्व को संपुष्ट करते हैं, खासकर यह कि छः वर्ष की अवस्था तक मस्तिष्क का 90% विकास हो जाता है। ये शोध इस बात की ओर भी संकेत करते है कि मस्तिष्क का विकास केवल स्वास्थ्य पोषण और देखभाल की गुणवत्ता से ही प्रभावित नहीं होता अपितु उस पर प्रारंभिक वर्षों में मिलने वाली मनोसामाजिक वातावरणा का भी प्रभाव पड़ता है।

जैसे–जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनकी विशेषताओं एवं उनके स्वभाव में भी परिवर्तन होता रहता है। छोटे और बड़े बच्चों में अंतर होते है एवं जैसे–जैसे वो विकास करते हैं, बढ़ते है, उनकी अलग–अलग क्षमताएँ विकसित होती जाती हैं कुछ जो कार्य जो 08 वर्ष का बच्चा कर सकता है वही कार्य 03 वर्ष का बच्चा नहीं कर सकता ठीक इसी प्रकार कुछ जो कार्य 03 वर्ष का बच्चा कर सकता है वह 01 वर्ष का बच्चा नहीं कर सकता। शिक्षक होने के नाते हमें बच्चों के विकास की इस स्वभाविक प्रक्रिया तथा उनकी परिवर्तनशील विशेषताओं को समझने की जरूरत है ताकि हम उन्हें सीखने के लिए समुचित अनुभव प्रदान कर सकें। जब शिक्षक विकास की विभिन्न अवस्थाओं को समझने में एवं उनमें अंतर स्पष्ट करने में समर्थ होगें तभी वह बच्चों के विकास के विभिन्न चरणों को पहचानने तथा संबोधित करने वाली गतिविधियों यथा– खेल, संवाद आदि का तद्नुसार आयोजन करने में समर्थ हो पाएँगें।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के औचित्य

उपर दिए गए विमर्शों से यह स्पष्ट होता है कि जीवन के प्रारंभिक 6 वर्ष विकास की दर के संदर्भ में काफी महत्त्वपूर्ण होते है। शोध इस बात की भी पुष्टि करते हैं कि मस्तिष्क का विकास स्वास्थ्य भोजन देखभाल की गुणवत्ता पर निर्भर होने के साथ–साथ मनोसामाजिक वातावरण की गुणवत्ता पर भी निर्भर करता है जिसमें बच्चों ने अपने प्रारंभिक वर्ष व्यतीत किए हैं। उपयुक्त मनो समाजिक वातावरण का प्रभाव डाल सकता है। इस तरह की स्थिति जनसंख्या के बडे प्रतिशत को जिसमें कि ज्यादातर बच्चे जो कि आभावग्रस्त परिवारों से होते है। गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के कार्यक्रम आभावग्रस्त स्थिति से आने वाले बच्चों के जीवन में दूरियों को पाटने में दूसरे कई कार्यक्रम अधिक कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

बाल्यावस्था में बच्चों को समर्थन देने वाले कार्यक्रमों का प्रभाव लम्बे समय तक रहता है इसकी प्रभावशीलता निम्न दिए गए बिन्दुओं पर निर्भर रहती है।

- दी गई सेवाओं की गुणवत्ता
- सेवाओं का विस्तार
- समय व गहनता
- व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता

वैज्ञानिक शोध इस बात को भी इंगित करते हैं कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के वर्षों के दौरान कुछ ऐसे संवेदनशील एवं नाजुक कालखंड होते हैं जिनका सीखने की योजना के दौरान योजना निर्माण हेतु ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा बच्चों के आगे के जीवन के विकास व सीखने पर भी बहुत प्रभाव डालती है। अतः उस अवस्था के सभी चरणों हेतु योजना प्रस्तावित करना आवश्यक हैं।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए एक अच्छा अधिगम कार्यक्रम निसंदेह बच्चों को उनके सर्वागीण विकास एवं सीखने के बेहतर अवसर प्रदान करता है। प्रारंभिक अवस्था में दिया गया सहयोग एवं समर्थन इस लिए भी महत्त्व रखता है क्योकि इस दौरान न केवल ऐसे बच्चों को चिनहित किया जा सकता है जो बिलंवित विकास, विशेष आवश्यकता वाले आभावग्रस्त परिवेश से आने वाले बच्चे है बल्कि इसको ध्यान में रखते हुए मदद हेतु योजना निमार्ण भी किया जा सकता है।

भारत के संदर्भ में प्रारंभिक बाल्यावस्था

भारतीय संविधान के भी विभिन्न प्रावधान देश में बच्चों की सुरक्षा, विकास और कल्याण के लिए कार्य किए जाने को आधार प्रदान करते हैं। प्रारंभ से ही बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए संरक्षित करना एवं सुनिश्चित करना स्वतंत्र भारत में योजना निर्माण का एक प्रमुख अंग रहा है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से जुड़े कार्यक्रमों ने न केवल देश में बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर बेहतर स्वास्थ्य एवं सीखने के अवसर प्रदान किए हैं बल्कि निम्न आयु वर्ग वाले परिवारों को भी अपने बच्चों की सुरक्षा के प्रति आश्वस्त किया है।

अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए 0–8 वर्ष की आयु को स्वीकार किया गया है और भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के आलोक में तैयार की गई '' प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षाः राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2010)'' ने भी यह माना कि प्रारंभिक बाल्यावस्था गर्भधारण से आठ वर्ष की उम्र तक होती है। परंतु वर्तमान समय में देश के प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा से जुड़े कार्यक्रमों के अंतर्गत 0–6 वर्ष के बच्चों को ही इसमें शामिल आदर्श के बीच एक बड़ा फासला देखा जाता है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षाः राष्ट्रीय फोकस समूह के आधारपत्र (2010) ने इस स्थापित अवधारणा का पूरी तरह समर्थन करते हुए यह कहा है कि मानव विकास के लिए जीवन के प्रारंभिक वर्षों का महत्त्व सर्वाधिक है। इस आधार पत्र में दुनिया भर में हुए विभिन्न शोध कार्यों का हवाला देते हुए कहा गया है कि इन शरूआती वर्षों के दौरान मस्तिष्क के अंतर्ग्रथनी संधि निर्माण (Forming of Syhaptic Connection in the brain) और दिमाग की क्षमता का संपूर्ण विकास संबंधित नाजुक दौर आते हैं। इस इस्तावेज ने तात्कालिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट रूप से कहा है कि चूँकि ई सी सी ई में वर्तमान समस्याएँ पूर्व नीतियों का परिणाम है अतः छोटे बच्चों के साथ न्याय करने के लिए पाढ्यचर्या संबंधी दूसरे सुधारों के बारे में बोलने से पूर्व बड़े नीतिगत परिवर्तनों की आवश्यकता होगी। इस आवश्यकता का आधार स्पष्ट करते हुए इसमें यह भी कहा गया है क '' यद्यपि विश्व स्तर पर किए गए अनुसंधान यह दर्शाते है के किसी बच्चे की 85 से 90 फीसदी तक केन्द्रीय मस्तिष्क की बनावट प्रारंभिक वर्षों के पूर्व ही पूर्ण हो जाती है, तब भी 6 वर्ष से कम आयु वाले बच्चों पर प्रति बालक वास्तविक व्यय 6–14 आयु वर्ग के बच्चों पर किए जा रहे व्यय का केवल 8 वॉ भाग ही दे। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को उचित रूप से प्राथमिकता नहीं दी गई है।

इस संदर्भ में एक बड़ा बदलाव तब आया जब शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के भाग III की धारा II के अंतर्गत यह सुझाव प्रस्तुत किया कि सरकारें 3 वर्ष से लेकर 6 वर्ष तक के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की उपयुक्त व्यवस्था कर सकती है। इसके फलस्वरूप इस दिशा में प्रगति अपेक्षित रूप से नहीं हो सकी है। 27 सितम्बर 2013 को भारत सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख एवं शिक्षा (ECCE) नीति को अंगीकार किया है। इस नीति के आलोक में 2014 में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की पाठ्यचर्या की रूप रेखा ने इस विषय को विस्तृत एवं स्पष्ट किया गया है कि जहॉ एक ओर स्वीकृत सामान्य सिद्धांतो को समझने की आवश्यकता है वहीं दूसरी ओर भिन्नतापूर्ण परिस्थितियों को भी महत्त्व देना होगा जिनके बीच रहते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम की अवधारणा 3 से 8 वर्ष की आयु के युवा शिक्षार्थियों को समग्र और उचित शिक्षण अनुभव प्रदान करने में निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाठयक्रम में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा खेल–आधारित और गतिविधि–आधारित दृष्टिकोण पर केंद्रित है, जो अनुभवात्मक शिक्षा के महत्व को पहचानता है और बच्चों को अपनी गति से खोजने, तलाशने और सीखने में सक्षम बनाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक वाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, संचार, सहयोग और समस्या–समाधान कौशल को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित है।

प्रारंभिक वाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम के उद्देश्य

1. **समग्र विकास :–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा का उद्देश्य युवा शिक्षार्थियों के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक और रचनात्मक पहलुओं पर जोर देकर उनके समग्र विकास का पोषण करना है। यह एक संतुलित और सर्व–समावेशी शिक्षण अनुभव प्रदान करके सर्वांगीण शिक्षार्थियों को बढ़ावा देना चाहता है।
2. **खेल–आधारित और गतिविधि–आधारित शिक्षा** :– प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को उनकी सीखने की प्रक्रिया में व्यावहारिक अनुभव, अन्वेषण और सक्रिय जुड़ाव प्रदान करने के लिए खेल–आधारित और गतिविधि–आधारित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता हैं। यह युवा शिक्षार्थियों को प्रयोग, खेल ओर सार्थक गतिविधियों के माध्यम से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

3. **समावेशिता और समानता :–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा प्रत्येक बच्चे के लिए समान पहुंच और भागीदारी सुनिश्चित करके समावेशिता पर ध्यान केंद्रित करता है–चाहे उनका लिंग, सामाजिक– आर्थिक पृष्ठभूमि, क्षमता या सांस्कृतिक विविधता कुछ भी हो। पाठ्यक्रम का लक्ष्य एक समावेशी शिक्षण वातावरण तैयार करना है जो विविधता एक जश्न मनाए और उसका सम्मान करें।
4. **कौशल विकास :–** पाठयक्रम रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, संचार, समस्या–समाधान, सहयोग और आत्म–अभिव्यक्ति सहित महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने पर जोर देता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठयक्रम का मुख्य उद्येश्य युवा शिक्षार्थियों को लगातार बदलती दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक दक्षताओं से लैस करना है।
5. **कल्याण और स्वास्थ्य :–** प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम युवा शिक्षार्थियों के कल्याण और स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करता है। यह पोषण, व्यक्तिगत स्वच्छता, शारीरिक फिटनेस और भावनात्मक कल्याण पर केंद्रित है। प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा का लक्ष्य एक सुरक्षित और पोषणपूर्ण वातावरण का निर्माण करना है जो छात्रों के समग्र कल्याण को बढ़ावा देता है।

6. **स्थानीय और सांस्कृतिक प्रासंगिकता :–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा सांस्कृतिक और स्थानीय ज्ञान, भाषाओं और परंपराओं को एकीकृत करने के महत्व को पहचानता है। इसका उधेश्य युवा शिक्षार्थियों को अपनी संस्कृति और विरासत के प्रति जड़ता, पहचान और प्रशसा की भावना से लैस करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक वाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम

नई शिक्षा नीति प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा के लिए एक लचीले और बाल–केंद्रित पाठ्यक्रम की कल्पना करती हैं जो निम्नलिखित क्षेत्रों पर केंद्रित हैः–

1. **प्रारंभिक साक्षरता और संख्यात्मकता :–**

पाठ्यक्रम आयु–उपयुक्त गतिविधियों, खेलों ओर कहानी कहने के माध्यम से मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल के विकास पर जोर देता है।

2. **सामाजिक और भावनात्मक विकास :–**

प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम सामाजिक और भावनात्मक कौशल का पोषण करता है, सहानुभूति, आत्म–नियमन और साथियों और देखभाल करने वालों के साथ सकारात्मक संबंधों को बढ़ावा देता है।

3. **शारीरिक विकास और कल्याण :–**

बच्चों के समग्र कल्याण ओर मोटर कौशल विकास को सुनिश्चित करने के लिए शारीरिक गतिविधियॉ, आउटडोर खेल और स्वास्थ्य शिक्षा पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है।

4. **रचनात्मक अभिव्यक्ति और कलात्मक कौशल :–**

प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा ड्राइंग, पेंटिंग, संगीत और नृत्य जैसे विभिन्न कला रूपों के माध्यम से बच्चों की रचनात्मकता और कल्पना को प्रोत्साहित करता है।

5. **पर्यावरण जागरूकता :–**

पाठ्यक्रम बच्चों में पर्यावरणीय जिम्मेदारी की भावना पैदा करता है, प्रकृति, स्थिरता और संरक्षण की समझ को बढ़ावा देता है।

6. **घरेलु भाषा और बहुभाषावाद :–**

मातृभाषा के महत्व को पहचानते हुए, प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम बहुभाषी दक्षता के लिए धीरे–धीरे अन्य भाषाओं को शामिल करते हुए घरेलू भाषाओं के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा में शिक्षकों और देखभालकर्ताओं की भूमिका :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा में अच्छी तरह से प्रशिक्षित और प्रेरित शिक्षको और देखभाल करने वालों की भूमिका पर जोर देता हैं वे बच्चों की पढ़ाई को सुविधाजनक बनाने, एक सुरक्षित और पोषणपूण वातावरण प्रदान करने और सकारात्मक रिश्तों को बढ़ावा देने में महत्वूपर्ण भूमिका निभाते है। शिक्षकों को बाल–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने, व्यक्तिगत आवश्यकताओं और रूचियों को पूरा करने और आकर्षक सीखने के अनुभव बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। NCERT को 8 वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठयचर्या और शैक्षणिक ढ़ांचा (NCPF ECCE) बनाने का काम सौंपा गया है। आंगनबाड़ियों और प्राथमिक विद्यालयों के बीच सेतु कार्यक्रम के रूप में प्रारंभिक कक्षाओं पर चर्चा की गई है। नीति मुख्य रूप से डिजिटल माध्यम से सभी आंगनबाड़ी और प्राथमिक विद्यालय कार्यकर्ताओं के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा से प्रशिक्षण और प्रमाणपत्र कार्यक्रम की योजना बनाती है। ये सभी प्रारंभिक बाल्यावस्था की शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच के लिए निर्देशित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल एवं शिक्षा में मजबूत निवेश की आवश्यकता को स्वीकार किया है, लेकिन अभी तक 2030 के लक्ष्य को पूरा करने में निजी खिलाड़ी क्या भूमिका निभा सकते है, इसका कोई उल्लेख नहीं है। नीति में निती प्री–स्कूलों के विनियमन पर भी चर्चा नहीं की गई है। बजट आवंटन और इसे अधिकार में शामिल करने पर कोई चर्चा नहीं होने से इसके कार्यान्वयन के लिए रोडमैप का अभाव है।

निष्कर्ष :

प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम बाल केंद्रित होते हैं और अध्यापकों अभिभावकों एवं अन्य सुरक्षा दाताओं को प्रारंभिक औपचारिक अधिगम के जोखिम के बारे में सचेत करते हैं यह विकासात्मक प्रतिमानो के अनुरूप खेल आधारित कार्यक्रम का अनुसरण करते हैं और संज्ञानात्मक, भाषिक, सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास के लिए बच्चों को गतिविधियों में संलग्न करते हैं तथा तरह–तरह के अनुभव एवं अवसर प्रदान करते हैं। गुणवत्ता परक प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत बाल विकास एवं विद्यालय की तैयारी (तत्परता) के भिन्न–भिन्न पहलुओं से जुड़े आयु एवं विकासात्मक प्रति मानव के अनुरूप गतिविधियां बहुत ही नवाचारी और लचीलेपन के साथ करवाई जाती हैं। जिससे कि बच्चे प्राथमिक कक्षाओं में जाने के लिए तनाव मुक्त तरीके से तैयार हो और उन्हें सीखने योग्य उत्प्रेरित वातावरण मिले ।

संदर्भ

- National Early Childhood Care and Education (ECCE) Curriculum Framework, Ministry of Women and Child Development
- National Council for Teacher Education (2015) Curriculum Framework of Diploma in Elementary Teacher Education (D.EL.ED.) Programme, NCTE, New Delhi
- NCTE (2010) National Curriculum Framework for Teacher Education towards Preparing Professional and Humane Teacher. Programme, NCTE, New Delhi
- Kaul, V. (2010). Early Childhood Education Programme NCERT, New Delhi.
- Kaul, V. et al. (2014). 'Readiness for School', Impact of Early Childhood Education Quality, CECCED, AUD, New Delhi.
- Kaul, V. Ramachandran C. & Upadhyay G.C. (1994). Impact of Early Childhood Education on Retention in Primary Grades: A longitudinal study, NCERT, New Delhi.
- Kaul, V. and Sankar, D. (2009). Early Childhood Care and Education in India, NEUPA, New Delhi.
- एन.सी.ई.आर.टी (2010) प्रारभिक बाल्यावस्था शिक्षाः राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, एन सी ई आर टी.
- एस.सी.ई.आर.टी (2008) बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008
- कौल वीनिता (2010), प्रारम्भिक बाल शिक्षा कार्यक्रम, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
- विभिन्न राज्यो द्वारा राष्ट्रीय ईसीसीई नीति, 2013 के आलाके में तैयार की गयी राज्य इसीसीई पाठ्यचर्या तथा अन्य ईसीसीई सामग्री.